फुलवारी

कविता

पानी और धूप

अभी-अभी थी धूप,
बरसने लगा कहाँ से यह
पानी.
किसने फोड़ घड़े बादल के,
की है इतनी शैतानी..

सूरज ने क्यों बंद कर
लिया
अपने घर का दरवाज़ा?
उसकी माँ ने भी क्या
उसको
बुला कहकर आजा..

ज़ोर-ज़ोर से गरज रहे हैं,
बादल हैं किसके काका?
किसको डाँट रहे हैं, किसने
कहना नहीं सुना माँ का.

कहानी

सच्चा गुरु कौन? : एक शिष्य की यात्रा

पुराने समय की बात है. एक आश्रम में एक बुद्धिमान और शांत स्वभाव के गुरु रहते थे. उनके कई शिष्य थे, जो दूर-दूर से उनके पास ज्ञान प्राप्त करने आते थे. उन सभी शिष्यों में तरुण नाम का एक युवक बड़ा ही उत्साही और महत्वाकांक्षी था. वह गुरु के ज्ञान और उनके सम्मान से बहुत प्रभावित था और हमेशा सोचता रहता था, काश! मैं भी एक दिन गुरु बन पाऊँ.

कुछ साल बीत गए. तरुण ने गुरु की सेवा में अपना समय बिताया और कई शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया. एक दिन, तरुण ने गुरु से मन की बात कही.

गुरुदेव, तरुण ने कहा, मैंने बहुत कुछ सीख लिया है. अब मेरा मन करता है कि मैं भी आप जैसा बनूं. मेरे भी शिष्य हों, और मुझे भी वही मान-सम्मान मिले जो आपको मिलता है. गुरु ने तरुण की बात को ध्यान से सुना और मुस्कुराकर बोले, तरुण, तुम्हारी इच्छा अच्छी है. लेकिन गुरु बनना इतना आसान नहीं है. इसके लिए वर्षों की तपस्या, त्याग और अपने ज्ञान को गहरा करना पड़ता है. तरुण थोड़ा बेचैन हो गया. इतने साल क्यों, गुरुदेव? मैंने तो बहुत कुछ जान लिया है. क्या मैं अभी से किसी को दीक्षा नहीं दे सकता? मुझे लगता है कि मैं अब तैयार हूँ.

गुरु ने तरुण की आँखों में देखा. उन्हें तरुण की जल्दबाज़ी और अहंकार का एहसास हुआ. उन्होंने तरुण को सीधे जवाब देने के बजाय एक छोटी-सी परीक्षा लेने का फैसला किया. गुरु ने तरुण को अपने पास बुलाया और कहा, तरुण, ज़रा इस तख़्त से नीचे उतर जाओ. तरुण ने तुरंत आज्ञा का पालन किया और नीचे खड़ा हो गया. इसके बाद, गुरु स्वयं उस ऊँचे तख़्त पर खड़े हो गए. फिर उन्होंने तरुण से कहा, अब तुम मुझे वापस उस तख़्त पर पहुँचा दो, जहाँ मैं पहले खड़ा था.

तरुण यह सुनकर हैरान रह गया. वह एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया, फिर बोला, गुरुदेव, यह कैसे संभव है? मैं खुद नीचे खड़ा हूँ. मैं आपको ऊपर कैसे उठा सकता हूँ? पहले तो मुझे खुद ऊपर आना होगा. गुरु ने धीमी और गहरी आवाज़ में कहा, तरुण, तुम्हारा जवाब ही तुम्हारे सवाल का जवाब है. तरुण ने गुरु की ओर देखा और कुछ समझ नहीं पाया.

गुरु ने कहा, ठीक इसी तरह, तुम किसी को अपना शिष्य बनाकर ऊपर उठाना चाहते हो, तो तुम्हारा खुद का स्तर ऊँचा होना ज़रूरी है. तुम जब तक खुद ज्ञान और विवेक के मामले में ऊँचे नहीं उठोगे, तब तक तुम किसी को रास्ता नहीं दिखा पाओगे. गुरु ने आगे कहा, सच्चा गुरु वह नहीं होता जो सिर्फ ज्ञान बाँटता है. सच्चा गुरु वह होता है जो अपने शिष्यों को अपने साथ ऊपर उठाता है. लेकिन इसके लिए, पहले तुम्हें अपने भीतर की कमियों को दूर करना होगा. अपनी महत्वाकांक्षा को सेवा में बदलो. गुरु की बात सुनकर तरुण की आँखें खुल गईं. उसे अपनी जल्दबाज़ी और छिपे हुए अहंकार का एहसास हुआ. वह समझ गया कि गुरु बनना एक पद नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है. यह सम्मान पाने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को सही राह दिखाने के लिए होता है. वह तुरंत गुरु के चरणों में झुक गया और बोला, गुरुदेव, मुझे माफ कर दीजिए. मैं अपनी मूर्खता के लिए शर्मिंदा हूँ. अब मैं समझ गया हूँ कि सच्चा गुरु वही होता है जो खुद पहले ऊँचा उठता है.

उस दिन से, तरुण ने अपनी महत्वाकांक्षा को एक तरफ रख दिया और सिर्फ ज्ञान को और गहरा करने में लग गया. उसने समझा कि जब वह सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेगा, तो शिष्य खुद-ब-खुद उसके पास आएंगे. और हुआ भी ऐसा ही. कुछ सालों बाद, तरुण एक विद्वान और विनम्र व्यक्ति के रूप में पहचाना जाने लगा, और लोग बिना कहे ही उसे गुरु मानकर उसका सम्मान करने लगे.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

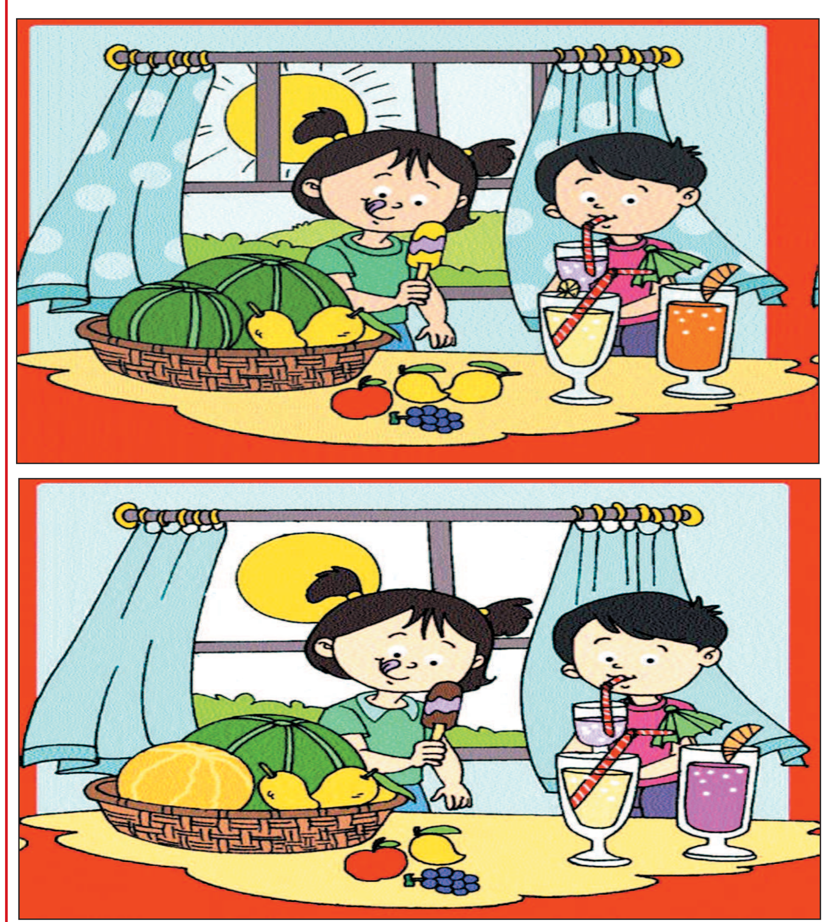

उत्तर :- 1. सूर्य की किरणें, 2. लड़की के हाथ की आइसक्रीम का कलर, 3. लड़के के सामने रखे गिलास के शर्बत में अंतर 4. टोकरी में रखे फलों में अंतर, 5. नीचे रखे फल में एक आम गायब

भूल भुलैया

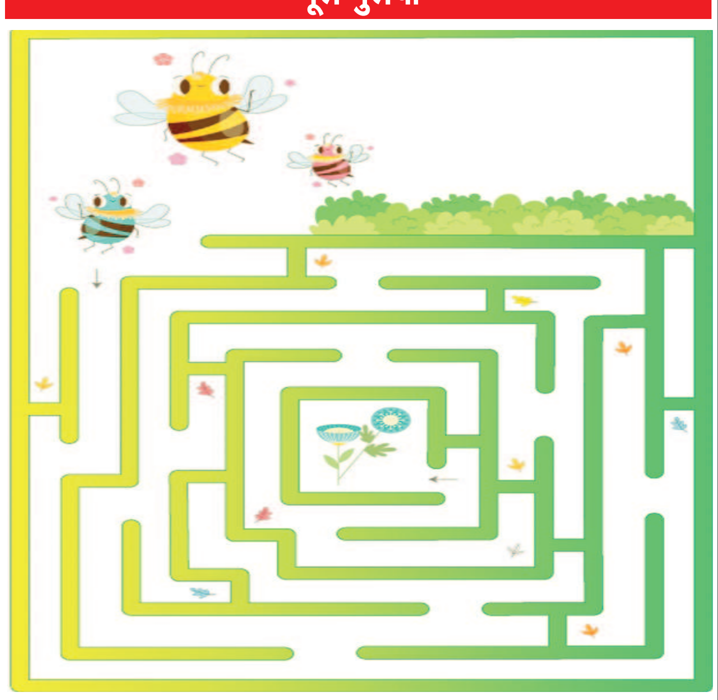

बूझो तो जानें

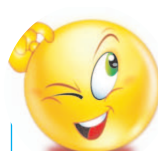

- रोज रात को वो आते हैं, बिना कुछ चुराए ही चले जाते हैं.
  उत्तर-तारे
- लाल शरीर और काला मुंह है, कागज वो खा जाता है. हर शाम पेट खोलकर कागज को कोई ले जाता है.
  उत्तर- पोस्ट बॉक्स
- एक पक्षी और रंग तीन, आसमान में उड़ान भरते देते सबको सुकून.
  उत्तर-भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा
- एक राजा की गजब है रानी, दुम के रास्ते वो पीती है पानी.
  उत्तर- दीपक
- तीन आदमी नदी में नहाने जाते हैं. जब बाहर आते हैं, तो उनमें से सिर्फ दो ही के बाल गीले थे, तीसरे के नहीं, सोचो कैसे?
  उत्तर- तीसरे व्यक्ति के सिर पर बाल ही नहीं थे.
- हरी डंडी और लाल कमर
  उत्तर- लाल मिर्च
- वो नींद में है पर उठने पर नहीं, कूदने में है पर भागने में नहीं, बताओ क्या है?
  उत्तर- 'द' अक्षर
- कई लोगों को राह दिखाए, कान पकड़कर लोगों को पढ़ाएं. साथ ही वे नाक भी दबाए, बताओ ये क्या कहलाए.
  उत्तर- चश्मा
- जेब में कुछ है, फिर भी जेब खाली है, बताओ क्या है?
  उत्तर- जेब में छेद है.
- पैसे से भी ऊपर है, यह जिसे मिले वो पंडित हो जाए, न मिले तो मूर्ख रह जाए.
  उत्तर- ज्ञान
- एक पानी का मटका, जो है ऊंचाई पर लटका. स्वाद में है मीठा बताओं क्या नाम है उसका.
  उत्तर- मधुमक्खी के छत्ते का शहद

आर्ट एंड क्राफ्ट

तितली वाला कार्ड बनाने का आसान तरीका

त्योहार, जन्मदिन , या किसी खास मौके पर अगर आप अपने हाथों से बनाया हुआ ग्रीटिंग कार्ड गिफ्ट करें, तो उसकी खुशियाँ और भी बढ़ जाती हैं. बच्चों के लिए क्राफ्ट हमेशा मजेदार और सीखने वाला अनुभव होता है. आज हम बनाएंगे तितली वाला काड. यह न केवल सुंदर दिखता है बल्कि बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को भी निखारता है.

आवश्यक सामग्री- ड्रॉइंग पेपर (दो अलग-अलग रंगों में) पेंसिल, कैंची, छेद करने वाली मशीन (पंचिंग मशीन), गोंद, मार्कर या रंगीन स्केच पेन, सजाने के लिए ग्लिटर / स्टिकर्स

बनाने की विधि

1. कार्ड की शेप तैयार करें- दो रंगीन ड्रॉइंग पेपर लें और दोनों को अलग-अलग आधा मोड़कर कार्ड की शेप बना लें. दोनों कार्ड को एक साथ रखें.

2. तितली का डिज़ाइन बनाएं- अब एक कार्ड पर पेंसिल से तितली की आउटलाइन बनाएं. दोनों कार्ड को इकठ्ठा रखकर उसी लाइन पर कैंची से काट लें. आपके पास दो सुंदर तितलियों की शेप निकल आएगी.

3. अंदर छोटी तितली बनाएं- एक तितली को फिर से आधा मोड़ें और उसके अंदर एक छोटी तितली का डिज़ाइन बनाएं. अब उस लाइन को काट लें. इस तरह आपके पास एक बड़ी और एक छोटी तितली तैयार होगी.

4. पंचिंग और जोड़ना- पंचिंग मशीन से दोनों तितलियों के कोनों पर छेद करें. अब गोंद की मदद से छोटे हिस्सों को बड़ी तितली पर चिपकाएँ. इससे आपका कार्ड थ्री-डी (3ष्ठ) इफेक्ट देगा.

5. सजावट और रंग भरना- अब मार्कर, रंगीन पेंसिल या स्केच पेन से तितली को रंग-बिरंगा बनाइए. काले और भूरे रंग से पंखों की बॉर्डर बनाएं और बीच में चमकीले रंग भरें. चाहें तो ग्लिटर, स्टिकर्स या बीड्स लगाकर इसे और खूबसूरत बना सकते हैं.

6. संदेश लिखें- कार्ड के अंदर अपनी शुभकामनाएँ, संदेश या कविता लिखें. यह कार्ड जन्मदिन, त्योहार या शिक्षक दिवस जैसे अवसरों के लिए बहुत खास बनेगा.

घड़ी का चलन : कब, कैसे और कहाँ शुरू

आज हम सबके जीवन में घड़ी बहुत ज़रूरी है. सुबह स्कूल जाने से लेकर रात को सोने तक हर काम समय पर करने के लिए हम घड़ी देखते हैं. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि घड़ी का चलन आखिर कब और कैसे शुरू हुआ?

सबसे पहली घड़ियाँ-पानी और धूप से समय मापना- हजारों साल पहले जब लोगों के पास आज जैसी घड़ी नहीं थी, तब वे सूरज और पानी की मदद से समय मापते थे.

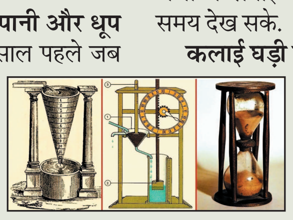

सूर्य घड़ी- मिस्र और यूनान में लोग ज़मीन पर डंडा गाड़कर उसकी छाया देखकर समय बताते थे. इसे सूर्य घड़ी कहा जाता था.

जल घड़ी- भारत, चीन और मिस्र में पानी की धार या बर्तन से पानी टपकने के आधार पर समय का अनुमान लगाया जाता था.

यांत्रिक घड़ियों की शुरुआत-लगभग 14वीं शताब्दी में यूरोप में यांत्रिक घड़ियाँ बनने लगीं. इनमें गियर और लटकन का इस्तेमाल होता था. ये घड़ियाँ बड़े टावरों या चर्चों में लगाई जाती थीं ताकि पूरा शहर समय देख सके.

कलाई घड़ी का जन्म- 16वीं शताब्दी में छोटी घड़ियाँ बननी शुरू हुईं जिन्हें लोग जेब में रखते थे, इन्हें पॉकेट वॉच कहा जाता था. 20वीं शताब्दी में कलाई घड़ी पुरुषों और बच्चों के बीच लोकप्रिय हो गई.

आधुनिक घड़ियाँ- आज हमारे पास सिर्फ़ सुई वाली घड़ी नहीं, बल्कि डिजिटल घड़ियाँ और स्मार्टवॉच भी हैं. ये न केवल समय बताती हैं बल्कि कदम गिनती हैं, दिल की धड़कन मापती हैं.

हंसी-ठिठोली

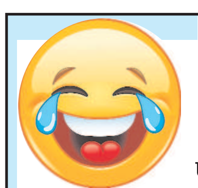

- डॉक्टर के पास पहुंच पप्पू, बोला मैं बीमार हूं
  डॉक्टर ने पप्पू से कहा- आपकी एक किडनी फेल हो गई है...
  पप्पू रोने लगा, और कुछ देर बाद आंसू पोंछते हुए बोला.....ये तो बता दीजिये डॉक्टर साहब कि मेरी किडनी आखिर कितने नंबर फेल से हुई?
- सेठ (नौकर से)- जरा देखना...कितना टाइम हो रहा है?
  नौकर- मुझे टाइम देखना नहीं आता.
  सेठ- अच्छा कोई बात नहीं .ये देखकर बताओ कि बड़ी सुई कहां है और छोटी सुई कहां है?
  नौकर- दोनों सुइयां घड़ी के अंदर हैं.
- सोनू- यार मोनू आज सुबह-सुबह एक बिल्ली ने मेरा रास्ता काट दिया.
  मोनू- अच्छा फिर क्या हुआ?
  सोनू- फिर क्या आगे जाकर उस बिल्ली का एक्सीडेंट हो गया. हमसे पंगा लिया...
- पिता ने पूछा- बेटा तू फेल कैसे हो गया?
  बेटा- पापा पेपर में प्रश्न ही ऐसे आए थे जो मुझे पता नहीं थे
  पिता- अच्छा तो फिर तुमने उत्तर कैसे लिखे?
  बेटा- मैंने भी उत्तर ऐसे लिखे, जो मास्टर को पता नहीं थे.
- टीचर- बताओ तुम्हार होमवर्क कहां है...
  पप्पू- मैडम फेसबुक पर चेक करिए, मैंने स्क्रीनशॉट अपलोड कर दिए हैं और आपको टैग भी कर दिया है.

प्रेरक प्रसंग

दादा भाई नौरोजी : बच्चों के लिए प्रेरक कहानी

क्या तुमने कभी सोचा है कि हमारे देश को आजादी दिलाने में कौन-कौन से नायकों ने मेहनत की? आज हम बात करेंगे दादा भाई नौरोजी की, जिन्हें 'भारत के दादाजी' या 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' कहा जाता है.

दादा भाई नौरोजी का जन्म और बचपन- दादा भाई नौरोजी का जन्म 4 सितंबर 1825 को मुंबई में एक साधारण पारसी परिवार में हुआ था. उनका परिवार बहुत अमीर नहीं था, लेकिन उनकी मां ने उन्हें पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया. छोटी उम्र में ही उनके पिता का देहांत हो गया, लेकिन उनकी मां ने हिम्मत नहीं हारी और दादा भाई को अच्छी शिक्षा दिलाई. वे एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़े और पढ़ाई में अव्वल रहे. क्या तुम जानते हो? वे पहले भारतीय थे जिन्हें अपने कॉलेज में प्रोफेसर बनने का मौका मिला!

देश के लिए उनका बड़ा योगदान- दादा भाई नौरोजी ने भारत को आजादी दिलाने के लिए बहुत मेहनत की. उन्होंने 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना में मदद की, जो आजादी की लड़ाई का एक बड़ा संगठन बना. वे तीन बार इस संगठन के अध्यक्ष भी बने. सबसे खास बात यह है कि वे पहले भारतीय थे जो ब्रिटिश संसद में सांसद बने. उन्होंने वहां जाकर बताया कि अंग्रेज भारत का धन लूट रहे हैं, जिसे 'ड्रेन थ्योरी' कहा जाता है. उनकी इस कोशिश से लोगों को पता चला कि हमें अपनी आजादी खुद हासिल करनी होगी.

मेहनत और सच्चाई की मिसाल- दादा भाई नौरोजी बहुत ईमानदार और मेहनती थे. वे सिर्फ पढ़ाई और राजनीति में ही नहीं, बल्कि समाज सुधार में भी आगे रहे. उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काम किया और सबके लिए बराबरी की बात की. उनकी एक मशहूर बात है, 卐हम सब अपनी मां भारती के बच्चे हैं, चाहे हम हिंदू हों, मुसलमान हों या पारसी, हम सबसे पहले भारतीय हैं!卐 यह बात बच्चों को सिखाती है कि हमें अपने देश से प्यार करना चाहिए और सबके साथ मिलकर रहना चाहिए.

तथ्य- दादा भाई नौरोजी 91 साल तक जिए और 30 जून 1917 को मुंबई में उनका निधन हुआ. उनकी याद में मुंबई में एक सड़क और दिल्ली में नौरोजी नगर का नाम उनके सम्मान में रखा गया है. वे महात्मा गांधी के गुरु भी थे, जिन्होंने उनकी प्रेरणा से आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाया.

बच्चों के लिए सीख- दादा भाई नौरोजी की कहानी हमें सिखाती है कि मेहनत, ईमानदारी और देशभक्ति से हम बड़ी-बड़ी मुश्किलों को हरा सकते हैं. चाहे हालात कितने भी कठिन हों, पढ़ाई और सच्चाई से हम अपने सपनों को सच कर सकते हैं.

बिंदु मिलाओ

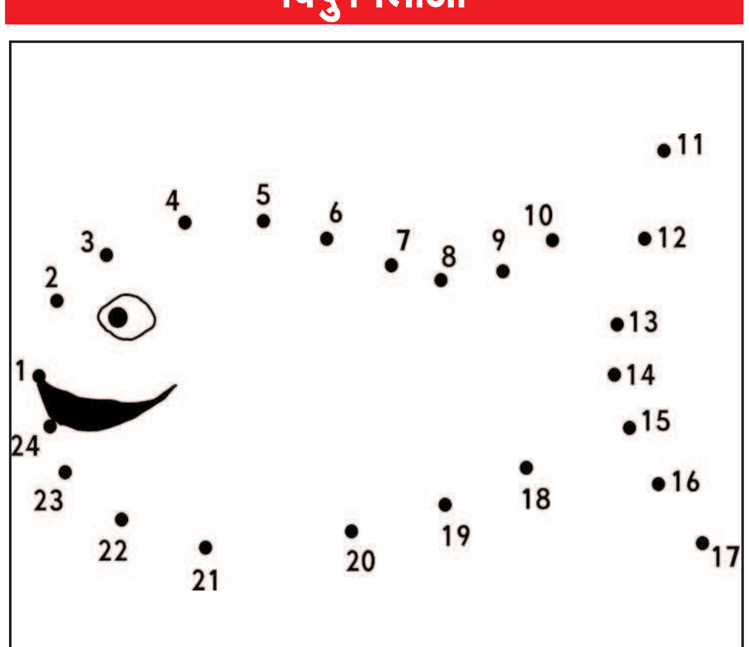

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.